

*Beyond Recitation:*  
*Tajwīd and Spirituality*  
**Notebook**



## Table of Contents

Lines 1 to 2 .....	5
Lines 3 to 4 .....	9
Lines 5 to 7 .....	13
Lines 8 to 11 .....	17
Lines 12 to 14 .....	21
Lines 15 and 16 .....	25
Lines 17 to 19 .....	29
Line 20 .....	33
Line 21 .....	37
Line 22 .....	41
Lines 23 and 24 .....	45
Lines 25 and 26 .....	49
Line 27 .....	53
Lines 28 and 29 .....	57
Line 30 .....	61
Line 31 .....	65
Lines 32 and 33 .....	69
Line 34 .....	73
Lines 35 and 36 .....	77
Line 37 .....	81
Line 38 .....	85
Line 39 .....	89
Line 40 .....	93
Line 41 .....	97
Lines 42 and 43 .....	100
Lines 44 to 48 .....	103
Line 49 .....	108
Lines 50 and 51 .....	112































Lines 8 to 11

8 فَلِلسَّبْعَةِ الْقُرَّاءِ حَقٌّ عَلَى الْوَرَى لِإِقْرَائِهِمْ قُرْآنَ رَبِّهِمْ الْوَثْرَى

So the seven reciters have a right on mankind for teach--  
Ing them the Qurʾān of their Lord without Equivalence

9 فَيَا الْحَرَمَيْنِ ابْنُ الْكَثِيرِ وَنَافِعٌ وَبِالْبَصْرَةِ ابْنُ الْعَلَاءِ أَبُو عَمْرٍو

Within the two *harams* are Ibn Kathīr and Nāfiʿ  
And Ibn ʿAlāʾ, Abū ʿAmr had in Baṣra his residence

10 وَبِالشَّامِ عَبْدُ اللَّهِ وَهُوَ ابْنُ عَامِرٍ وَعَاصِمُ الْكُوفِيِّ وَهُوَ أَبُو بَكْرٍ

And in the Levant is ʿAbd Allāh, the son of ʿĀmir  
And ʿĀṣim, father of Bakr, Kufan of provenance

11 وَحَمْزَةُ أَيْضًا وَالْكَسَائِيُّ بَعْدَهُ أَخُو الْحَدِثِ بِالْقُرْآنِ وَالنَّحْوِ وَالشَّعْرِ

And Ḥamza also and al-Kisāʾī after him  
In Qurʾān, grammar, and poetry holding proficiency

---

---

---

---

---

---

---

---







Lines 12 to 14

12 قَدُّو الْحِدْقَ مُعْطٍ لِلْحُرُوفِ حُقُوقَهَا إِذَا رَتَّلَ الْقُرْآنَ أَوْ كَانَ ذَا حَدْرٍ

A person of proficiency gives letters' rights they're due  
When he recites Qur'an deliberately or hastens

13 وَتَرْتِيلُنَا الْقُرْآنَ أَفْضَلُ لِلَّذِي أَمَرْنَا بِهِ مِنْ مُكْنِتِنَا فِيهِ وَالْفِكْرِ

Deliberately reciting Qur'an is better since it does  
What we are commanded for: lingering, contemplations

14 وَمَهْمَا حَدَرْنَا دَرَسْنَا فَمُرَخَّصٌ لَنَا فِيهِ إِذْ دِينُ الْعِبَادِ إِلَى الْيُسْرِ

And when we hasten during lessons it is accommodation  
As ease for servants is religion's facilitations

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---













































Line 22

إِذَا مَا تَلَا النَّالِي أَرَقَّ لِسَانَهُ      وَأَذْهَبَ بِالْإِدْمَانِ عَنْهُ أَدَى الصَّدرِ 22

The reader, through reciting, he untangles his tongue  
And lifts through soulful devotion his heart's afflictions

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---







Lines 23 and 24

فَأَوَّلُ عِلْمِ الذِّكْرِ إِتْقَانُ حِفْظِهِ 23  
وَمَعْرِفَةٌ بِاللَّحْنِ مِنْ فِيكَ إِذْ يَجْرِي

And the first Qur’ānic science is mastering memorization,  
And knowledge of mistakes, whenever there’s occurrence

فَكُنْ عَارِفًا بِاللَّحْنِ كَيْمَا تُزِيلَهُ 24  
وَمَا لِلَّذِي لَا يَعْرِفُ اللَّحْنَ مِنْ عُذْرٍ

And know mistakes in order to remove them, because  
Not recognizing errors is not excuse for acquittance

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

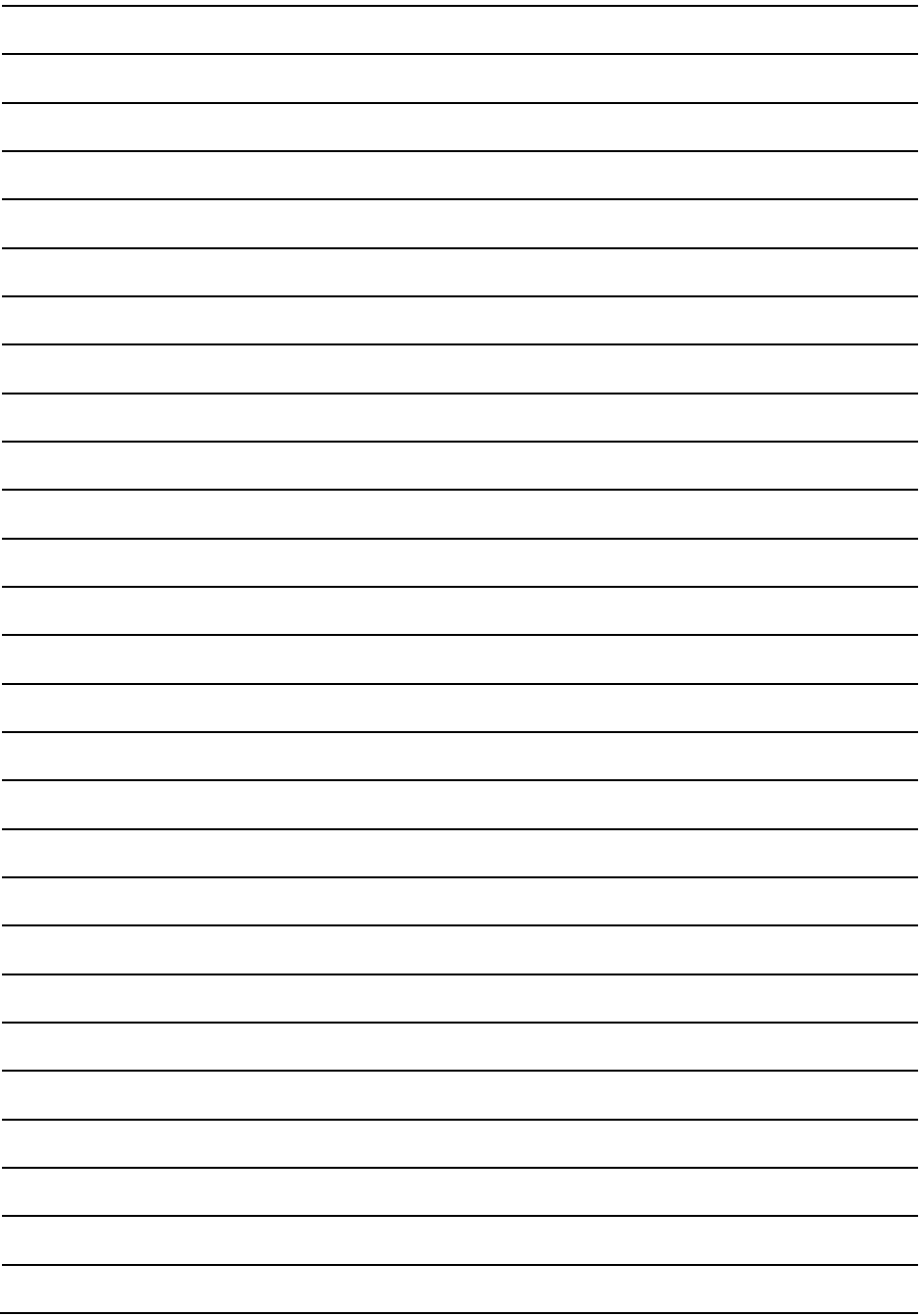
---

---

---









Lines 25 and 26

25 وَإِنْ أَنْتَ حَقَّقْتِ الْقِرَاءَةَ فَاحْذَرِي  
زِيَادَةَ فِيهَا وَإِسْأَلِ الْعَوْنَ ذَا الْقَهْرِ  
الـــــــ

If you do *tahqīq* of recitation be in caution  
Of increasing in it, and ask the Almighty's assistance

26 زَيْنَ الْحُرْفِ لَا تُخْرِجْهُ عَنْ حَدِّ  
فَوَزُنْ حُرُوفَ الذِّكْرِ مِنْ أَفْضَلِ الْبِرِّ  
وَزْنـــــــه

Measure the letter, do not unbound it from its weight,  
Balancing Qur'ānic letters is from heights of reverence.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

















Lines 28 and 29

فَبَيِّنْ إِدْنَ مَا يَنْبَغِي أَنْ تُبَيِّنَهُ      وَأَدْعِمْ وَأَخْفِ الحُرْفِ فِي عَثْرِ مَا عُسِرَ      28

Make clear what should be read clearly; make *idghām* and *ikhfā'*  
On a letter in which difficulty has no presence

وَإِنَّ الَّذِي تُخْفِيهِ لَيْسَ بِمُدْعَمٍ      وَبَيْنَهُمَا فَرْقٌ فَعَرَّفَهُ بِالْيُسْرِ      29

In those of which you make *ikhfā'*, you do not make *idghām*  
A gap<sup>1</sup> exists between the two and easy is the difference

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

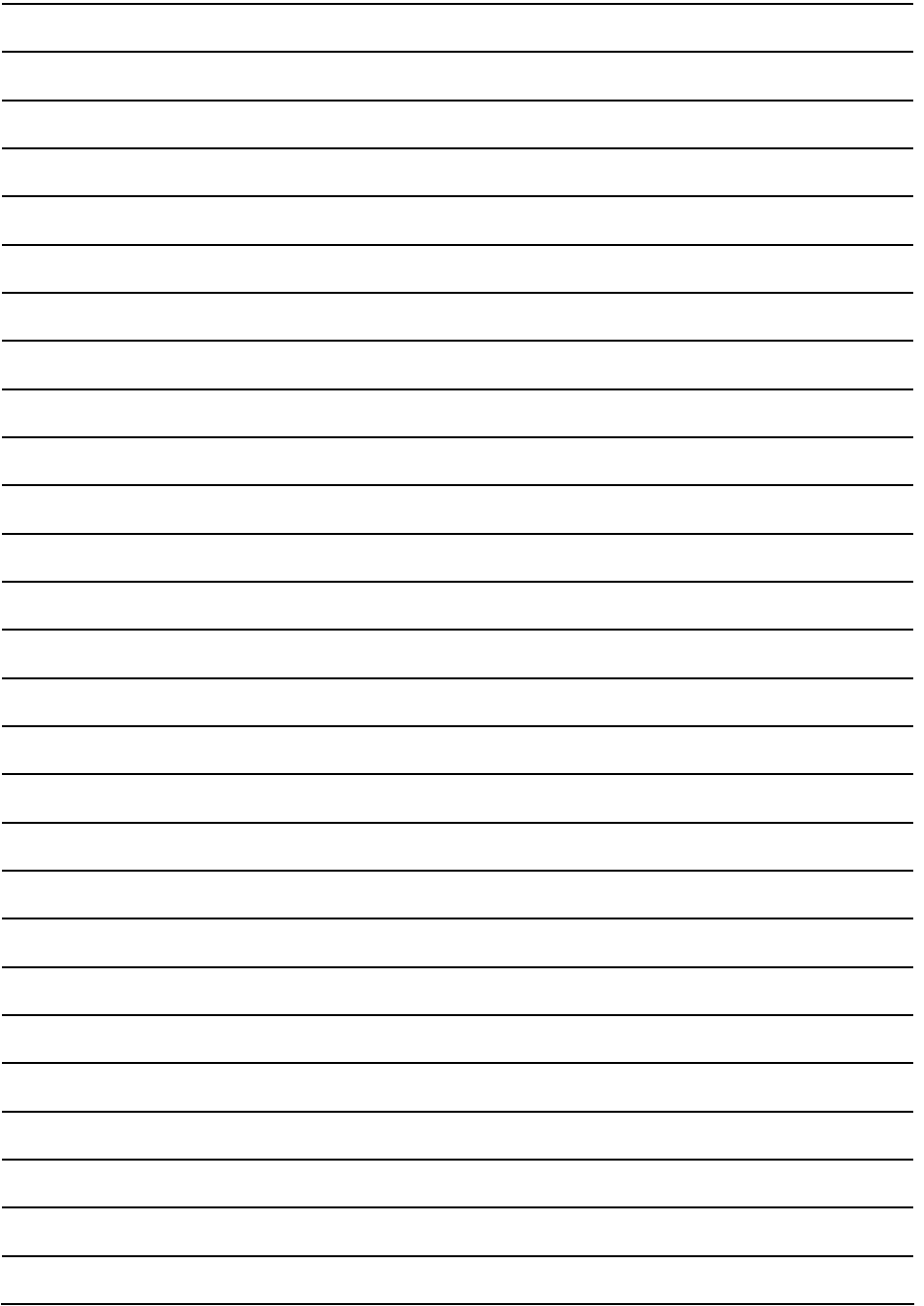
---

---

---

<sup>1</sup> Difference







Line 30

وَقُلْ إِنَّ تَسْكِينَ الْحُرُوفِ لِحُزْمِهَا      وَتَحْرِيكَهَا لِرَفْعِ وَالتَّصْبِ وَالْجَرِّ      30

Say *sukūn* on the letters is due to the *jazm* case,  
And the *rafʿ*, *naṣb*, and *jarr* are the cause of their inflections.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

















Lines 32 and 33

وَمَا الْمَدُّ إِلَّا فِي ثَلَاثَةِ أَحْرَفٍ 32      تُسَمَّى حُرُوفَ اللَّيْنِ بَاخَ بِهَا ذِكْرِي

There is no *madd* except in three letters, named letters  
Of *Lin*. My account will reveal to you their existence

هِيَ الْأَلِفُ الْمَعْرُوفُ فِيهَا سُكُونُهَا 33      وَوَاوُ وَيَاءُ يَسْكُنَانِ مَعًا فَادِرِ

The *alif*, known to hold its own *sukūn*; and *yā'* and *wāw*  
When both are with *sukūn*, so understand and have acceptance.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---









Line 34

وَلَا تُفْرِطْنَ فِي فَتْحِكَ الْحَرْفِ وَالْكَسْرِ

وَحَقَّفْ وَثَقَّلْ، وَأَشْدِدِ الْفَاكَ عَامِدًا 34

Make *takhfif* and *tathqil*, pronounce firmly -- purposefully,  
In the *fathah* and the *kasrah* don't exceed the balance

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---



A series of 24 horizontal lines spaced evenly down the page, providing a template for writing or drawing.



Lines 35 and 36

35 وَمَا كَانَ مَهْمُورًا فَكُنْ هَامِرًا لَهُ وَلَا تَهْمِزَنْ مَا كَانَ يَخْفَى لَدَى النَّبْرِ

Apply the *hamza* in what has a *hamza* in it  
And don't make *hamza* on the hidden *nabr* for elegance

36 وَإِنْ تَكُ قَبْلَ الْيَاءِ وَالْوَاوِ فَتَحَةٌ وَبَعْدَهُمَا هَمَزٌ هَمَزَتْ عَلَيَّ قَدْرٍ

And if you have a *fathah* before a *yā'* or *wāw*,  
And *hamza* after, pronounce it according to measurements.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

















Line 38

دَرَسْتَ، وَكُنْ فِي الدَّرْسِ مُعْتَدِلَ الأَمْرِ

وَأَنْعِمُ بَيَانَ الْعَيْنِ وَالْهَاءِ كُلَّمَا

38

Pronounce ‘*ain* and *ḥā*’ pleasantly whenever you rehearse  
And be balanced in your lesson in every circumstance.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---









Line 39

وَقَفُّ عِنْدَ إِتْمَامِ الْكَلَامِ مُوَافِقًا 39  
لِمُصْحَفِنَا الَّذِي نَتْلُوهُ فِي الْمَبَرِّ وَالْبَحْرِ

Stop at the cessation of meaning, in accordance to  
Our *muṣḥaf*, which is oft recited on the land and oceans

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---







Line 40

وَلَا تُدْغَمَنَّ الْمِيمَ إِذَا جِيَتْ بِعَدَّهَا 40 بِحَرْفٍ سِوَاهَا وَأَقْبَلَ الْعِلْمَ بِالشُّكْرِ

Do not make *idghām* of *mīm* if after it is any  
Other letter, and take my offer with a grateful response

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---









## Line 41

وَصْمُكَ قَبْلَ الْوَارِثِينَ مُشْبِعًا لَهُ 41 كَمَا أَشْبَعُوا (إِيَّاكَ نَعْبُدُ) فِي الْمَرِّ

Fulfill the *ḍammah* if it comes before the *wāw* properly

Like in *iyyāka naʿbud* -- make it full as you advance.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---





Lines 42 and 43

وَإِنْ حَرْفُ لَيْنٍ كَانَ مِنْ قَبْلِ مُدْغِمٍ      كَأَخْرِ مَا فِي الْحَمْدِ فَأَمْدُدْهُ وَأَسْتَجِرِ      42

If a letter of the *līn* comes before a merged letter,  
Like the end of *Fātiḥah*, lengthen it to its ends

مَدَدَتْ لِأَنَّ السَّاكِنَيْنِ تَلَاقِيَا      فَصَارَا كَتَحْرِيكِ كَذَا قَالَ ذُو الْخُبْرِ      43

You lengthen *madd* because the two *sukūns* have come together  
Becoming like a vowel, so say those who know the science.

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---





Lines 44 to 48

وَأَسْمِي حُرُوفًا سِتَّةً لِتُخَصَّهَا 44  
بِإِظْهَارِ نُونٍ قَبْلَهَا أَبَدَ الدَّهْرِ

I classify these six letters that are specified by  
The clear reading of *nūn* before them at every instance

فَحَاءٌ وَخَاءٌ ثُمَّ هَاءٌ وَهَمْزَةٌ 45  
وَعَيْنٌ وَعَيْنٌ وَعَيْنٌ لَيْسَ قَوْلِي بِالتَّنْكِيرِ

*Ḥā'* and *khā'*, *hā'* and *hamza*, *‘ain* and *ghain* are the letters  
So of my statement you must be in full acceptance

فَهَذِي حُرُوفُ الحَلْقِ يَخْفَى بَيَانُهَا 46  
فَدُونِكَ بَيْنَهَا وَلَا تَعْصِينَ أَمْرِي

The letters of the throat these, their clarity routinely  
Hidden, clarify onto others and be in obedience

وَلَا تُشَدِّدِ التَّوْنَ الَّتِي يُظْهِرُونَهَا 47  
كَقَوْلِكَ (مِنْ خَيْلٍ) لَتَأْتِ سُورَةَ الْحَشْرِ

Do not then emphasize the *nūn* which you are making clear  
Like *min khaylin* in al-Ḥashr when it's in your utterance

وَإِظْهَارِكَ التَّنْوِينَ فَهُوَ قِيَاسُهَا 48  
فَقِسْهُ عَلَيْهَا فُزْتُ بِالْكَاعِبِ الْبِكْرِ

And reading the *tanwīn* as clear is analogous to *nūn*,  
Parallel with it: *heavenly bride* will be amongst your gains





























